

दिनांक 17.05.2017 को केंद्रीय मनोचिकित्सा संस्थान (C.I.P.), राँची के 100वें स्थापना दिवस के अवसर पर आयोजित समारोह में माननीय राज्यपाल महोदया का अभिभाषण

मुझे केन्द्रीय मनोचिकित्सा संस्थान (C.I.P.), राँची के 100वें स्थापना दिवस के अवसर पर आयोजित समारोह में सम्मिलित होकर अपार प्रसन्नता हो रही है। सर्वप्रथम, इस गौरवशाली क्षण के अवसर पर मैं इस प्रतिष्ठित संस्थान के **Director, other members of Management, Psychiatrists, Faculty Members, Staffs, researchers** और इससे जुड़े सभी व्यक्तियों को हार्दिक बधाई देती हूँ। मैंने अपने स्तर पर माननीय प्रधानमंत्री एवं स्वास्थ्य मंत्री, भारत सरकार से पत्र द्वारा संवाद किया है एवं निरंतर प्रयासरत हूँ कि इस संस्थान को **NIMHANS, Bangalore** के तौर पर समस्त सुविधाओं से परिपूर्ण किया जाय तथा **Centre of Excellence** बनाया जाय। ज्ञात हो कि **NIMHANS, Bangalore** की स्थापना 50 के दशक में हुई थी।

मुझे यह कहते हुए खुशी हो रही है कि आज का यह दिन न केवल इस संस्थान के लिए अहम है, बल्कि इस राज्य और राष्ट्र के लिए भी अहम है। साथ ही उन लोगों के लिए विशेष रूप से महत्वपूर्ण हैं, जो **mental health** की अहमियत को पहचानते हैं। इस संस्थान की स्थापना की नींव 100 वर्ष पहले आज ही के दिन रखी गई थी। **mental health** के क्षेत्र में यहाँ के **professionals** का अहम योगदान रहा है। यह **mental health** से **concern** अन्य संस्थानों के लिए भी कई क्षेत्रों में प्रेरणा का कार्य कर रहा है। यह हमारे राज्य के लिए गर्व की बात है कि **C.I.P., राँची** ने मनोरोगियों के रोगों के उपचार, **mental**

health professionals के training और psychological disorders के क्षेत्र में शोध हेतु राष्ट्रीय स्तर पर अपनी विशिष्ट पहचान स्थापित की है।

विगत कुछ वर्षों से लोगों में मानसिक रोग बढ़ रहे हैं, जो हमारे समक्ष एक गंभीर चुनौती है। मैंने कुछ माह पहले C.I.P., राँची के visit के क्रम में यहाँ का वातावरण बिल्कुल अच्छा पाया। रोगियों के उपचार के साथ-साथ उन्हें सुविधाएँ सुलभ कराने हेतु सभी तत्पर एवं प्रयासरत है। इस हेतु यहाँ के कर्मी भी सक्रिय रहते हैं तथा अपेक्षा के अनुरूप C.I.P. द्वारा मरीजों के बेहतर treatment में अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करने की सदा कोशिश करते हैं। यह बहुत ही अच्छी बात है। मरीजों को सेवा भाव से ख्याल रखें। यदि मरीज के रोगों का सफल उपचार आपके यहाँ हो जाता है, तो केवल मरीज ही नहीं, बल्कि उसके पूरे परिवार के सदस्य एवं समाज आपको दुआ देते हैं। यहाँ आप समाज को कुछ देने का कार्य करते हैं। स्वस्थ भारत के निर्माण में अपना अहम योगदान देते हैं। याद रहे, शारीरिक रूप से ही सिर्फ स्वस्थ रहना, व्यक्ति का पूर्ण स्वस्थ होना नहीं कहलाता। शारीरिक के साथ-साथ मानसिक रूप से स्वस्थ रहने पर ही वह पूर्ण स्वस्थ कहलाता है।

Mental disorders अथवा depression काबू पाना एक महत्वपूर्ण चुनौती है। अवसाद एवं मानसिक बीमारियों के कारण बहुत से लोगों की मृत्यु होने तक की घटनायें सुनने में आती है, suicide की घटनायें बढ़ रही हैं। ये mental illness एवं suicide की tendency बच्चों, युवाओं, महिलाओं एवं पुरुषों, सभी में विभिन्न कारणों से पाये जा रहे हैं, जो बेहद दुखद एवं चिन्तनीय है। यह देखा जा रहा है कि लोग आज विभिन्न कारणों से

तनाव में भी जीवन जी रहे है। बेशक आज **competition** का युग है। **competition** के दौड़ में पिछड़ने से एवं तनाव से भी लोगों में **depression** बढ़ रहे है, वे हीन भावना से ग्रसित हो रहे हैं और कभी-कभी वे **suicide** तक भी कर बैठते हैं, जो गलत है। लोगों को इस प्रतियोगिता के युग और जीवन को समझना होगा, उसे इसे चुनौती के रूप में लेना होगा और उसका सामना डटकर करना होगा। जिन्दगी को अच्छी तरह जीना होगा। मन हारकर नहीं बैठना होगा। अपनी इच्छाशक्ति को मजबूत करें। **Mental Disorders** एवं **Depression** के क्षेत्र में सफलता हेतु **Psychiatrists** की भूमिका अहम है। उन्हें लोगों को इस रोग से लड़ने हेतु मानसिक रूप से साहस प्रदान करनी होगी। इस हेतु समाज में जागरुकता लाने का कार्य करना होगा।

आज मनोरोगियों की संख्या में वृद्धि **Drugs** और **Alcohol** के सेवन करने से भी अधिक हो रही हैं। इसके शिकार खासकर, युवा वर्ग अधिक हो रहे है। उन्हें इससे बचना चाहिए। हमारे युवा हमारे राष्ट्र की बहुमूल्य पूँजी है, वे हमारे देश के भविष्य है। उन्हें इन सब बुरी आदतों से दूर रहना होगा क्योंकि यदि वह बीमार रहेंगे तो हमारा देश बीमार रहेगा। युवाओं को मनोरोग से ग्रसित होने से बचाने के लिए, नशापान से दूर रहने के लिए भी समाज में विशेष जागरुकता अभियान फैलाने की जरूरत है और इसमें **C.I.P.** को महत्वपूर्ण भूमिका अदा करनी चाहिए।

आये दिन समाचारपत्रों व समाचार चैनलों के माध्यम से यह खबर सुनने को मिलता है कि बच्चे किसी परीक्षा में **success** नहीं होने से अथवा **unsuccessful** होने के भय से भी **Depression** के शिकार हो जाते है। इसके निदान हेतु बच्चों में साहसिक प्रवृत्ति उत्पन्न करने

हेतु **Parents** और **Teachers** को बेहतर प्रयास करना होगा। बच्चों को सफलता हेतु निरंतर कोशिश करने पर बल देना होगा। मन कभी नहीं हारना चाहिये।

इस अवसर पर मैं यह कहना चाहूँगी कि लोगों को भी मनोरोग से सम्बन्धित बीमारी का थोड़ा भी शक होने पर **Psychiatrists** के पास बेझिझक जाना चाहिए। अमूमन यह देखने को मिलता है कि लोग **Psychiatrists** के पास जाने में झिझकते हैं, उसे लगता है कि उस **Doctor** के पास जाने से लोग उन्हें या उनके परिवार के सदस्य को पागल न समझें, लोगों में यह धारणा बिल्कुल गलत है। मानसिक रोगी अथवा मनोरोगी अपनी बीमारी से जितना पीड़ित रहता है, उससे अधिक वह मानसिक रोग से जुड़े भय, शर्म और ग्लानि से पीड़ित रहता है। उन्हें समझना होगा कि यह समस्या बहुत आम है, जिससे डरने या मजाक उड़ाने की सोच की बजाय इससे उबड़ने हेतु सार्थक पहल करनी चाहिए। इस बीमारी को भी आम बीमारी की तरह लोगों को समझना चाहिए। इस बीमारी का शिकार कोई भी व्यक्ति कभी भी हो सकता है। यह लोगों को समझना होगा और अन्य बीमारियों की भाँति इसका भी इलाज जल्द-से-जल्द कराना चाहिए। इसमें कोई झिझक नहीं होना चाहिए। इसके लिए भी **Psychiatrists** को भी समाज में जागरूकता फैलानी होगी और आम-जनों के मन में व्याप्त इस गलतफहती को दूर करने में अपनी अहम भूमिका का निर्वाह करना चाहिए। **Yoga** और **Exercise** की अहमियत को समझना होगा।

आज **C.I.P.** के द्वारा “**Media and Mental Health**” विषय पर एक गोष्ठी का भी आयोजन किया जा रहा है। इस विषय के चयन हेतु मैं आयोजकों को बधाई देती हूँ क्योंकि आज **Mental Health** के क्षेत्र में **Media** की भूमिका दिखती है। आज **Internet** एवं **Social**

**Sites** के युग में लोग मनोरोग से अवगत हो जाते हैं। **Media** के माध्यम से लोगों में इसके प्रति जागरूकता भी आती है, चाहे वह **Newspaper** हो **T.V. Channel** या **Internet** एवं **Social Sites**. लोग इसके माध्यम से **Mental Disorders** एवं **Depression** के बारे में समझ सकते हैं और इसके कारणों के बारे में। **Internet** पर इसके सन्दर्भ में विभिन्न **Doctors** के महत्वपूर्ण **Article** सुलभ हो जायेंगे। वहीं एक हद से ज्यादा अशांत चित्त में **Facebook, Whatsapp** बिना मतलब के उलझे रहना, लोगों के **Mental Health** में बाधक बनकर आये हैं। इतना ही नहीं, बहुत-से लोग निरंतर अच्छी **selfie photographs** कैसी है, लोगों में प्रभाव क्या है, इसकी तक चिन्ता करते हैं तथा सोचते रहते हैं। साथ ही **Social Sites** पर अपने **friends, followers** से प्रशंसा से अपेक्षा के बारे में सोचते हैं, ये सब मन को पीड़ा देते हैं। ऐसी व्यर्थ सोच और पीड़ा भी अवसाद का शिकार बना लेती है।

आशा है कि यह गोष्ठी लोगों को मनासिक रूप से स्वस्थ रखने में अहम साबित होगा। **Media, Mental Health** के क्षेत्र में सार्थक भूमिका का निर्वहन करेगा। हमारे युवा वर्ग में इसकी उपयोगिता के बारे में जागरूकता आयेगी। साथ ही इसके दुष्परिणामों से दूर रहेंगे।

अन्त में, मेरी कामना है कि यह संस्थान बहुत आगे बढ़े और देश ही नहीं विदेशों में भी इस संस्थान का नाम और यश अच्छे संस्थानों की गिनती में आये। साथ ही सभी स्वस्थ रहे, इस हेतु सदा सचेष्ट रहें।

जय हिन्द ! जय झारखण्ड!